बिहार में साहित्यकारों की बड़ी परम्परा: सभापति

बिहार में साहित्यकारों की बड़ी परम्परा: अवधेश नारायण-

patna@inext.co.in

PATNA (4 Dec): भले ही राजनीतिक राजधानी दिल्ली है, लेकिन जब भी साहित्यिक राजधानी की बात होगी तो पटना और बनारस ही अग्रणी होगा. बिहार में साहित्यकारों की बड़ी परम्परा रही है. ये बातें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को व्याख्यायित करते हुए बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कही. वे एएन कॉलेज पटना के पुस्तकालय सभागार में 'आचार्य रंजन सूरिदेव: व्यक्तित्व एंव कृतित्व' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद पर बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर से लेकर श्रीरंजन सूरिदेव का जन्म इसी धरती पर हुआ है. सभी गेस्ट का स्वागत एएन कॉलेज के प्रिंसिपल प्रो. एसपी शाही ने किया. कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीरंजन सूरिदेव के तैल चित्र पर सामूहिक पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया.

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए गेस्ट व अन्य.

पांडुलिपियों का हो प्रकाशन

अध्यक्षीय उदघोष में केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पूर्व अध्यक्ष प्रो. नंद किशोर पांडेय ने कहा कि भारत ने विश्वगुरु की परंपरा का निर्वहन किया है. उन्होंने स्पष्ट कहा कि आचार्य जी को वह सम्मान नहीं मिला जिसके वह हकदार थे. राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने उन्हें अपने आसन से नीचे उतरकर उन्हें सम्मानित किया था. प्रो. पांडेय ने आगे कहा कि उनकी जो पांडुलिपियां रखी हुई है उसका प्रकाशन होना चाहिए.

व्यक्तित्व में थी गहराई

बिहार लोकसेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि रचनात्मकता की त्रिवेणी श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी. भाषा की दृष्टि से वे त्रिभाषा परम्परा के प्रतीक पुरुष थे. उन्होंने कहा कि उनके साहित्यिक आदर्श शिवपूजन सहाय, नलिन विलोचन शर्मा और लक्ष्मी नारायण सुधांशु थे. दो दर्जन से अधिक पुस्तकें उनकी प्रकाशित है. बिहार विधान परिषद् के सदस्य राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के साथ उनका व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा, वे देखने में जितने सुंदर थे उससे कहीं ज्यादा उनके व्यक्तित्व में गहराई थी जो उनके साहित्य में दिखती है.

एजुकेशनल न्यूज

शिक्षा ही सर्वोपरि

'आचार्य श्री रंजन सूरिदेवः व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद

संवाददाता | एजुकेशनल न्यूज

शनिवार को ए. एन. कॉलेज ,पटना के पुस्तकालय सभागार में साहित्य अकादमी,नई दिल्ली के तत्वावधान में 'आचार्य श्री रंजन सूरिदेवः व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य देते हुए श्री अजय कुमार शर्मा,सहायक संपादक, साहित्य अकादमी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य छिपी हुई प्रतिभाओं को सामने लाना और उन पर सार्थक परिचर्चा आयोजित करना होता है। साहित्य अकादमी द्वारा बिहार की धरती पर बिहार के प्रमुख साहित्यकार आचार्य श्री रंजन सूरिदेव पर परिसंवाद आयोजित कराने का प्रमुख उद्देश्य यही है कि स्थानीय लोग सूरिदेव जी के साहित्यिक साधना से परिचित हों।

इसके पूर्व महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो.शशिप्रताप शाही ने सम्मानित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादमी द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य रंजन सूरिदेव की रचनाओं में राष्ट्र गौरव और बिहारी अस्मिता को महसूस किया जा सकता है।सूरिदेव जी अक्षर पुरुष थे।वे एक साथ संस्कृत,प्राकृत और हिन्दी भाषा के बड़े विद्वान थे। हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।वे अनुभव और ज्ञान के विशाल भंडार थे।प्रो.शाही ने प्रो.अरुण कुमार भगत जी को आचार्य सूरिदेव पर लिखी गई आलोचनात्मक लेखों का संपादन कर पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने के लिए विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस परिसंवाद के मुख्य अतिथि श्री अवधेश नारायण सिंह, माननीय सभापति, बिहार विधान परिषद ने कहा कि तकनीक के सम्पर्क से साहित्य और भी तेजी से विकसित होता है।आज साहित्यिक राजधानी के रूप में पटना, वाराणसी आदि शहर तेजी से विकसित हो रहा है। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा और उसके व्यवहारिक रूप को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि सरल भाषा में लिखा गया साहित्य ही लोकप्रिय और श्रेष्ठ होता है। साहित्य सारे बंधनों को तोड़ता हुआ समाज में समरसता स्थापित करता है। उन्होंने आचार्य सूरिदेव द्वारा रचित शब्दकोश को प्रकाशित करवाने में हर संभव मदद का भी आश्वासन दिया।

वहीं इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, माननीय सदस्य, बिहार विधान परिषद अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य सूरिदेव से उनका व्यक्तिगत संपर्क था।उनका व्यक्तित्व उदार था। बिहार की धरती पर पढ़ लिखकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उनकी अविस्मरणीय भूमिका रही है। श्री गुप्ता ने मैथिली भाषा और विशेष कर उसकी लिपि पर गंभीर संकट के उदाहरणों को सामने रखते हुए हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास और संवर्धन के लिए सबों को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि देश की सांस्कृतिक विरासत को बचाने की जरूरत है।

वहीं बीज वक्तव्य रखते हुए प्रो. अरुण कुमार भगत, माननीय सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य श्री रंजन सूरिदेव हिन्दी भाषा और साहित्य के गौरव पुरुष थे।वे महत्वपूर्ण कवि,कुशल गद्यकार और श्रेष्ठ संपादक थे। उनके साहित्य में रचनात्मकता की त्रिवेणी , निर्झरणी की भाँति प्रवाहित है।आचार्य सूरिदेव भाषा की दृष्टि से त्रिभाषा के प्रतीक पुरुष थे। हिन्दी, संस्कृत और प्राकृत की त्रिधारा का विलक्षण संगम उनके साहित्य में देखा जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य शिवपूजन सहाय, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा और लक्ष्मी नारायण सुधांशु आचार्य सूरिदेव के तीन आदर्श साहित्यकार थे।वे वैदिक ज्ञान परंपरा, बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन के विद्वान आचार्य थे। छायावादोत्तर कवियों में नवीन भाषाई प्रयोग के वे प्रयोक्ता थे।प्रो.अरुण कुमार ने आचार्य सूरिदेव द्वारा प्रतिपादित मौलिकता के विसर्जन के सिद्धांत को भी विस्तार से समझाया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो.नंदकिशोर पांडेय, अधिष्ठाता, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने कहा कि यह बिहार के लिए गौरव की बात है कि एक समय आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, नलिन विलोचन शर्मा, दिनकर, रेणु, नागार्जुन, आचार्य सूरिदेव जैसे अनेक साहित्यकार एक साथ लिख रहे थे। उन्होंने कहा कि आचार्य रंजन सूरिदेव जी की अप्रकाशित रचनाएं शीघ्र प्रकाशित होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आचार्य सूरिदेव जी को राहुल सांकृत्यायन, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और काशी प्रसाद जायसवाल की परंपरा में पढ़ने की जरूरत है।

इस सत्र का मंच संचालन श्री गौरव सुन्दरम और श्री अभिजीत कश्यप ने किया वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ.प्रवीण चंद्र राय ने किया।

इस कार्यक्रम के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कुणाल कुमार ने कहा कि श्रेष्ठ रचना वही होती है जिसे पढ़ने के बाद पाठकों के मन कोई क्रांति घटित होती है। उन्होंने कहा कि आचार्य सूरिदेव नये नये शब्द गढ़ते थे।वे श्रेष्ठ साहित्यकार होने के साथ साथ स्नेह की प्रतिमूर्ति थे। वहीं गुंजन अग्रवाल ने कहा कि उन्होंने सर्वाधिक पुस्तकों की भूमिका, समीक्षा लिखी। उन्होंने अनेक पत्र भी लिखा। सभी का संकलन आवश्यक है।

इस सत्र के विशिष्ट वक्ता प्रख्यात साहित्यकार प्रो.कुमुद शर्मा ने कहा कि आचार्य शब्द सबके साथ नहीं जुड़ता। आचार्य रंजन सूरिदेव विनम्रता और विद्वत्ता के संगम थे।वे बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री अनिल शर्मा जोशी, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिन्दी संस्थान ने कहा कि आचार्य रंजन सूरिदेव ने 26 वर्ष तक परिषद पत्रिका का संपादन किया। उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य के एक युग का निर्माण किया। लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व के बीच एकरूपता के अद्भुत उदाहरण थे।इस सत्र का संचालन जहां डॉ.अशोक कुमार ने किया वहीं धन्यवाद ज्ञापन श्री शोभित सुमन किया। विशिष्ट वक्ता प्रख्यात समालोचक कैलाश प्रसाद सिंह स्वच्छंद,प्रख्यात साहित्यकार डॉ.शिवनारायण और समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात साहित्यकार डॉ.उदय प्रताप सिंह ने आचार्य रंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की।इस सत्र में मंच संचालन जहां डॉ.ध्रुव कुमार ने किया वहीं धन्यवाद ज्ञापन श्री गौरव रंजन ने किया।

इस अवसर पर साहित्य अकादमी नई दिल्ली के अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे।साथ ही प्रो.बबन कुमार सिंह,प्रो.शैलेश कुमार सिंह ,प्रो.नरेन्द्र कुमार,डॉ.संजय कुमार सिंह ,डॉ.विद्या भूषण,डॉ.मणिभूषण,डॉ.भारती कुमारी सहित महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

हिंदी का टेक्नोलॉजी से जुड़े रहना जरूरी

पटना। बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि आज टेक्नोलॉजी का युग है, अगर हिंदी टेक्नोलॉजी से जुड़ रही है तो यह बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि भले ही देश की राजनीतिक राजधानी दिल्ली है, लेकिन जब भी साहित्यिक राजधानी की बात होगी तो पटना व बनारस ही अग्रणी होगा।

पटना में संगोष्ठी का शुभारंभ करते बिहार विधान परिषद के सभापति व अन्य।

सभापति पटना में शनिवार को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के तत्वावधान में 'आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद को बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी परंपरा ही यह रही है कि सभी प्रदेशों की संस्कृति का मिलन एक बिंदु पर होता है, यही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। समारोह को अभिजीत कश्यप व केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष प्रो. नंद किशोर पांडेय ने भी संबोधित किया। (विज्ञप्ति)

तकनीक के संपर्क से विकसित हुआ साहित्य

पटना | वरीय संवाददाता

परिसंवाद का उद्घाटन करते बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह, एमएलसी राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बीपीएससी के सदस्य प्रो. अरुण कुमार व अन्य।

तकनीक के सम्पर्क से साहित्य और भी तेजी से विकसित हुआ है। आज साहित्यिक राजधानी के रूप में पटना, वाराणसी आदि शहर तेजी से विकसित हो रहे हैं। बिहार विधान परिषद सभापति अवधेश नारायण सिंह ने एएन कॉलेज में आयोजित परिसंवाद में ये बातें कहीं।

आचार्य श्रीरंजन सूरिदेवः व्यक्तित्व और कृतित्व विषय पर परिसंवाद एएन कॉलेज, पटना के पुस्तकालय सभागार में साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित किया गया। विधान परिषद विशिष्ट अतिथि सदस्य राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता व साहित्य अकादमी सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। एएन कॉलेज प्राचार्य प्रो. शशिप्रताप शाही व बिहार लोकसेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने कहा कि रचनात्मकता की त्रिवेणी श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी। भाषा की दृष्टि से वे त्रिभाषा परम्परा के प्रतीक पुरुष थे। इसके अलावा राजस्थान विवि के अधिष्ठाता प्रो. नंदकिशोर पांडेय, डॉ. कुणाल कुमार, प्रो. कुमुद शर्मा, केंद्रीय हिन्दी संस्थान उपाध्यक्ष अनिल शर्मा जोशी ने भी अपने विचार रखे।

हिन्दी भाषा और साहित्य के गौरव पुरुष थे आचार्य श्री रंजन सूरिदेव

एजुकेशन रिपोर्टर | पटना

एएन कॉलेज में राष्ट्रीय परिसंवाद कार्यक्रम में मौजूद अतिथिगण।

एएन कॉलेज के पुस्तकालय सभागार में साहित्य अकादमी के तत्वावधान में आचार्य श्री रंजन सूरिदेवः व्यक्तित्व और कृतित्व विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में मुख्य अतिथि बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि तकनीक के सम्पर्क से साहित्य और भी तेजी से विकसित होता है। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा और उसके व्यवहारिक रूप को विस्तार से समझाया जबकि विधान पार्षद राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि आचार्य सूरिदेव से उनका व्यक्तिगत संपर्क था। उनका व्यक्तित्व उदार था। बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने कहा कि आचार्य श्री रंजन सूरिदेव हिन्दी भाषा और साहित्य के गौरव पुरुष थे। वे महत्वपूर्ण कवि, कुशल गद्यकार और श्रेष्ठ संपादक थे। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य छिपी प्रतिभाओं पर सार्थक परिचर्चा आयोजित करना होता है। वहीं प्राचार्य प्रो.शशि प्रताप शाही ने आचार्य रंजन सूरिदेव की रचनाओं में राष्ट्र गौरव और बिहारी अस्मिता को महसूस किया जा सकता है। परिसंवाद में प्रो.नंदकिशोर पांडेय, डॉ. कुणाल कुमार, प्रो. कुमुद शर्मा, अनिल शर्मा जोशी, डॉ.अशोक कुमार आदि भी मौजूद रहे।

साहित्यिक राजधानी की राह पर पटना

आचार्य श्री रंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व' पर परिसंवाद

कार्यक्रम

संवाददाता ▷ पटना

कार्यक्रम का उद्घाटन करते बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह व अन्य.

बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि तकनीक के संपर्क से साहित्य और भी तेजी से विकसित होता है. आज साहित्यिक राजधानी के रूप में पटना, वाराणसी आदि शहर तेजी से विकसित हो रहा है. उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा व उसके व्यावहारिक रूप को समझाया. साहित्य सारे बंधनों को तोड़ता हुआ समाज में समरसता स्थापित करता है. उन्होंने आचार्य सूरिदेव द्वारा रचित शब्दकोश को प्रकाशित करवाने में हर संभव मदद का भी आश्वासन दिया. वे एएन कॉलेज के पुस्तकालय सभागार में साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली के तत्वावधान में 'आचार्य श्री रंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर राष्ट्रीय परिसंवाद में मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे. विशिष्ट अतिथि बिहार विधान परिषद के सदस्य राजेंद्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि आचार्य सूरिदेव का व्यक्तित्व उदार था.

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य छिपी हुई प्रतिभाओं को सामने लाना और उन पर सार्थक परिचर्चा आयोजित करना होता है. प्राचार्य प्रो शशिप्रताप शाही ने कहा कि सूरिदेव जी अक्षर पुरुष थे. वे एक साथ संस्कृत, प्राकृत और हिंदी भाषा के बड़े विद्वान थे. हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है. वे अनुभव और ज्ञान के विशाल भंडार थे. लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो अरुण कुमार भगत ने कहा कि आचार्य रंजन सूरिदेव हिंदी भाषा और साहित्य के गौरव पुरुष थे. प्रो अरुण कुमार ने आचार्य सूरिदेव द्वारा प्रतिपादित मौलिकता के विसर्जन के सिद्धांत को भी विस्तार से समझाया. अध्यक्षीय वक्तव्य प्रो नंदकिशोर पांडेय ने दिया. इस मौके पर गौरव सुंदरम, अभिजीत कश्यप, डॉ प्रवीण चंद्र राय, साहित्यकार डॉ कुणाल कुमार, गुंजन अग्रवाल, साहित्यकार प्रो कुमुद शर्मा, अनिल शर्मा जोशी, डॉ अशोक कुमार, शोभित सुमन, समालोचक कैलाश प्रसाद सिंह स्वच्छंद, साहित्यकार डॉ शिवनारायण, साहित्यकार डॉ उदय प्रताप सिंह, डॉ ध्रुव कुमार, गौरव रंजन, प्रो बबन कुमार सिंह, प्रो शैलेश कुमार सिंह, प्रो नरेंद्र कुमार, डॉ संजय कुमार सिंह, डॉ विद्या भूषण, डॉ मणिभूषण, डॉ भारती कुमारी ने आचार्य रंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा की.

हिंदी का टेक्नालाजी से जुड़ना बड़ी बात : अवधेश

जागरण संवाददाता, पटना : आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के शब्दकोश के प्रकाशनार्थ जो भी सहयोग होगा जरूर किया जाएगा। हिंदी टेक्नोलाजी से जुड़ रही है। यह बड़ी बात है। भले ही राजनीतिक राजधानी दिल्ली है, लेकिन जब भी साहित्यिक राजधानी की बात होगी तो पटना और बनारस ही अग्रणी होगा।

उक्त बातें बिहार विधान सभा के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहीं। मौका था साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के तत्वावधान में एएन कालेज में आयोजित 'आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद के आयोजन का।

इससे पहले कार्यक्रम की शुरुआत आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के तैल चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पूर्व अध्यक्ष प्रो. नंद किशोर पांडेय ने कहा कि आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव को वह सम्मान नहीं मिला जिसके वे हकदार थे। जो पांडुलिपियां अभी प्रकाशनार्थ पड़ी हुई हैं उन्हें अतिशीघ्र प्रकाशित कराया जाना चाहिए। बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने कहा कि रचनात्मकता की त्रिवेणी आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी।

साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से एन कालेज में एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का शुभारंभ करते अतिथि। ● जागरण

व्यक्तित्व में दिखी थी साहित्य की गहराई : बिहार विधान परिषद् के सदस्य राजेंद्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि वे देखने में जितने सुंदर थे, उससे कहीं ज्यादा उनके व्यक्तित्व में गहराई थी जो उनके साहित्य में दिखती है। एएन कालेज, पटना के प्रधानाचार्य शशि प्रताप शाही ने कहा कि आधुनिक हिंदी के शिल्पी आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव की चर्चा किए बिना हिंदी साहित्य की कल्पना अधूरी है। दिल्ली विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्रोफेसर डा. कुमुद शर्मा ने कहा कि जो बेहतर इंसान बनाए वही साहित्य है।

इन्होंने भी रखे विचार : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष आनंद शर्मा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सहायक संपादक डा. अजय शर्मा, साहित्यकार कैलाश प्रसाद, डा.कुणाल कुमार, मेहता नगेन्द्र, गुंजन अग्रवाल, हिंदुस्तानी अकादमी के अध्यक्ष साहित्यकार डा. उदय प्रताप सिंह, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा.शिवनारायण ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर प्रो. वीरेंद्र झा, डा. ध्रुव कुमार, गौरव रंजन, शोभित सुमन, कृष्णा अनुराग, दिव्या, सुमित कुमार आदि ने कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता दी। कार्यक्रम के संयोजक अभिजीत कश्यप ने अतिथियों का परिचय कराया।

श्रीरंजन सूरिदेव के शब्दकोश को प्रकाशित करने में मिलेगा सहयोग : सभापति

पटना (एसएनबी)। साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली के तत्वावधान में आचार्य श्रीरंजन सूरिदेवः व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर एक द्विदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित किया गया। श्रीरंजन सूरिदेव के तैल चित्र पर सामूहिक पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। समारोह के संयोजक अभिजीत कश्यप ने अतिथियों का परिचय कराया तथा अतिथियों को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने की। मुख्य अतिथि बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि आज टेक्नोलॉजी का युग है। अगर हिंदी टेक्नोलॉजी से जुड़ रही है तो यह बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि भले ही राजनैतिक राजधानी दिल्ली है, लेकिन अब भी साहित्यिक राजधानी की बात होगी तो पटना और बनारस ही आगे होगा। श्री सिंह ने कहा कि बिहार में साहित्यकारों की बड़ी परम्परा रही है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर से ले कर श्रीरंजन सूरिदेव का जन्म इसी धरती पर हुआ है। राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह से जुड़े संस्मरणों को सुना कर उन्होंने अपनी वाणी को विराम देते हुए आश्वासन दिया कि आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव जी के 'शब्दकोश' के प्रकाशनार्थ जो भी सहयोग होगा, वह जरूर किया जाएगा।

अध्यक्षीय संबोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर नंदकिशोर पांडेय ने कहा कि भारत में विजिगुरु की परंपरा का निर्वाहन किया है। बिहार की धरती से जिन साहित्यकारों का उदय हुआ, उन सभी को नमन करते हुए उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव को राहुल सांकृत्यायन और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की परंपरा में देखा जाना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि आचार्य जी को वह सम्मान नहीं मिला जिसके वह हकदार थे। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने उन्हें अपने आसन से नीचे उतरकर उन्हें सम्मानित किया था। प्रो. पांडे ने आगे कहा कि उनकी जो पांडुलिपियां अभी प्रकाशनार्थ पड़ी हुई हैं, उन्हें अविलंब प्रकाशित कराया जाना चाहिए। बाल साहित्य पर उन्होंने आठ पुस्तकें लिखीं।

इस अवसर पर बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने कहा कि रचनात्मकता की त्रिवेणी श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी। भाषा की दृष्टि से वे 'त्रिभाषा परम्परा' के प्रतीक

समारोह का शुभारंभ करते सभापति व अन्य अतिथि।

पुरुष थे। उन्होंने कहा कि उनके साहित्यिक आदर्श शिवपूजन सहाय, नलिन विलोचन शर्मा और लक्ष्मी नारायण सुधांशु थे। वे वैदिक ज्ञान परम्परा, बौद्ध दर्शन और जैन चिंतन के प्रकांड अध्येता रहे। उन्होंने जानकारी दी कि राजकुमार पाठक नाम उन्हें घर से मिला, परन्तु श्रीरंजन सूरिदेव नाम। प्रो. भगत ने कहा कि वे सम्पादकों के सम्पादक थे इसीलिए

> साहित्य अकादमी के तत्वावधान में 'आचार्य श्रीरंजन सूरिदेवः व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित

उन्हें सम्पादकाचार्य भी कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि 'मौलिकता के विसर्जन' का सिद्धान्त श्रीरंजन सूरिदेव ने ही प्रतिपादित किया था। 'मेघदूतः एक अनुचिंतन' उनकी कालजयी रचना है। दो दर्जन से अधिक पुस्तकें उनकी प्रकाशित हैं।

बिहार विधान परिषद के सदस्य राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के साथ उनका व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा। वे देखने में जितने सुंदर थे, उससे कहीं ज्यादा उनके व्यक्तित्व में गहराई थी जो उनके साहित्य में दिखती है। उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव और आरसी प्रसाद सिंह बिहार की साहित्यिक विभूतियां हैं। आज यह समय आ गया है कि हमें हिंदी को वह गौरव दिलाना है जिसकी वह हकदार है। उन्होंने इसी क्रम में कहा कि कैथी लिपि लुप्त होती जा रही है। मोबाइल में आ रही नयी तकनीकों ने लिखने-पढ़ने की परंपरा पर चोट की है। उन्होंने कहा कि आज पाश्चात्य जीवन दर्शन को जीने वाले हिंदी का साहित्य सृजित कर रहे हैं, इनके विचार भारतीय चिंतन-दर्शन से दूर दिखाई पड़ते हैं, आचार्यजी जैसे रचनाकारों की आज अत्यधिक आवश्यकता है। एएन कालेज के प्रधानाचार्य शशि प्रताप शाही ने कहा कि साहित्य अकादमी का कार्यक्रम महाविद्यालय में होना, यह अपने आप में गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि आधुनिक हिंदी के शिल्पी श्रीरंजन सूरिदेव की चर्चा किये बिना हिंदी साहित्य की कल्पना अधूरी है। अपनी बातों को बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि उनका संस्कृत, हिंदी और प्राकृत पर समान अधिकार था। साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली के सहायक सम्पादक डा. अजय शर्मा ने कहा कि हम देशभर में ऐसे कार्यक्रम करते रहते हैं, ताकि नयी पीढ़ी जागरूक हो सके। उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव का कर्मक्षेत्र बिहार की धरती थी इसीलिए इस कार्यक्रम का आयोजन पटना में किया जा रहा है।

दूसरे सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष आनन्द शर्मा जोशी ने कहा कि विचारकों और बुद्धिजीवियों का एक वर्ग इस देश में रहा और है जो इस देश को खण्ड-खण्ड में विभाजित करना चाहता है। ऐसे समय में देश को जोड़ने का प्रयास आचार्यजी की रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। दिल्ली विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्रोफेसर डा. कुमुद शर्मा ने कहा कि 'आचार्य' शब्द पूंजी प्राप्त नहीं होता। उनकी वैचारिक संवेदना ने उन्हें साहित्य का सिरमौर बनाया। साहित्य के मानदंड को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने कहा कि जो बेहतर इंसान बनाये वही साहित्य है।

प्रख्यात साहित्यकार डा. कुणाल कुमार, गुंजन अग्रवाल, हिन्दुस्तानी अकादमी के अध्यक्ष प्रख्यात साहित्यकार डा. उदय प्रताप सिंह ने भी अपनी बातें रखीं। पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डा. शिवनारायण ने कहा पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी, पंडित जानकी वल्लभ शास्त्री की वैदुष्य परम्परा में आचार्य जी को देखा जाना चाहिये इसीलिए उन्हें भी पंडित कहा जाना चाहिए। इस अवसर पर कैलाश स्वरूप, प्रो. वीरेंद्र झा, डा. ध्रुव कुमार, गौरव रंजन, शोभित सुमन, कृष्णा अनुराग, दिव्या, सुमित कुमार आदि ने कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता दी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्राध्यापक, शोधार्थी और छात्र शामिल हुए।

नारी चेतना को नूतन स्वर देती हैं कामिनी श्रीवास्तव की कविताएं

पटना (एसएनबी)। विदुषी कवयित्री और दिल्ली उच्च न्यायालय में अधिवक्ता कामिनी श्रीवास्तव की कविताएं नारी चेतना को नूतन स्वर देती हैं। इनकी कविताओं में एक सुकुमार कवयित्री की कोमल भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। कामिनी जी काव्य-कल्पनाओं से संपन्न एक प्रतिभावान कवयित्री हैं। यह बातें शनिवार को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में ब्रजेंद्र श्रीवास्तव स्मृति न्यास के तत्वावधान में आयोजित पुस्तक लोकार्पण समारोह एवं कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डा. अनिल सुलभ ने कही। उन्होंने कहा कि अपनी कविता 'द्रौपदी' में कवयित्री ने यह प्रश्न उठाकर कि क्या कोई स्त्री पांच पति रख सकती है, समाज के समक्ष एक बड़ी चुनौती रखी है। कविताएं छंद मुक्त हैं,पर उनमें भाव और काव्य-कल्पनाएं मनोहारी हैं। मुख्य अतिथि तथा चाणक्य राष्ट्रीय विधिविश्वविद्यालय की कुलपति न्यायमूर्ति मृदुला मिश्र ने कहा कि कामिनी जी की यह पहली काव्यकृति है। अधिवक्ता के व्यस्ततापूर्ण जीवन में भी अवकाश निकाल कर इन्होंने अपने भावों और संवेदनाओं को कोमल अभिव्यक्ति प्रदान की है। मंत्रिमंडल सचिवालय, बिहार सरकार में विशेष सचिव एवं वरिष्ठ कवि डा. उपेंद्रनाथ पाण्डेय ने कहा कि कविता कविता अहंकार का विसर्जन है। इसकी गति वक्राकार है। इसमें उपलब्धि के लिए बड़ी साधना चाहिए। लोकार्पित पुस्तक की कवयित्री ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। सम्मेलन की उपाध्यक्ष डा. मधु वर्मा, खत्री सभा बिहार के अध्यक्ष अनंत अरोड़ा, प्रेम खन्ना, डा. जनार्दन यादव तथा जौली श्रीवास्तव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कवि सम्मेलन का आरंभ कवयित्री कामिनी श्रीवास्तव के काव्यपाठ से हुआ।

पुस्तक का लोकार्पण करते अतिथि।

> साहित्य सम्मेलन में काव्य-संग्रह 'यशोधरा' का लोकार्पण

उन्होंने अपनी रचना 'हमारी गूंगी' का पाठ किया। मृत्युंजय मिश्र करुणेश, डा. उपेन्द्र नाथ पाण्डेय, डा. शंकर प्रसाद, प्रो. इंद्रकांत झा, बच्चा ठाकुर, ब्रह्मानंद पाण्डेय, कुमार अनुपम, ओम प्रकाश पाण्डेय प्रकाश, डा. सत्येंद्र सुमन, शमा कौसर शमा, मोईन गिरिडीहवी, डा. आर प्रवेश, डा. बीरेंद्र कुमार विष्णुपुरी, अर्जुन प्रसाद सिंह, प्रभात धवन तथा डा. कुंदन लोहानी ने भी अपनी रचनाओं से कवि-सम्मेलन को सार्थकता प्रदान की। संचालन सुनील कुमार दूबे तथा धन्यवाद ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया। चंदा मिश्र, निहाल कुमार सिंह निर्मल, प्रह्लाद वर्मा, रुचि अरोड़ा, अंजलि वर्मा, कविता श्रीवास्तव, मधुरेश नारायण, अधिवक्ता शिवानंद गिरि आदि प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

हिन्दी भाषा और साहित्य के गौरव पुरुष थे आचार्य श्री रंजन सूरिदेव

एजुकेशन रिपोर्टर | पटना

एएन कॉलेज के पुस्तकालय सभागार में साहित्य अकादमी के तत्वावधान में आचार्य श्री रंजन सूरिदेवः व्यक्तित्व और कृतित्व विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में मुख्य अतिथि बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि तकनीक के सम्पर्क से साहित्य और भी तेजी से विकसित होता है। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा और उसके व्यवहारिक रूप को विस्तार से समझाया जबकि विधान पार्षद राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि आचार्य सूरिदेव से उनका व्यक्तिगत संपर्क था। उनका व्यक्तित्व उदार था। बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने कहा कि

एएन कॉलेज में राष्ट्रीय परिसंवाद कार्यक्रम में मौजूद अतिथिगण।

आचार्य श्री रंजन सूरिदेव हिन्दी भाषा और साहित्य के गौरव पुरुष थे। वे महत्वपूर्ण कवि, कुशल गद्यकार और श्रेष्ठ संपादक थे। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य छिपी प्रतिभाओं पर सार्थक परिचर्चा आयोजित करना होता है। वहीं प्राचार्य प्रो.शशि प्रताप शाही ने आचार्य रंजन सूरिदेव की रचनाओं में राष्ट्र गौरव और बिहारी अस्मिता को महसूस किया जा सकता है। परिसंवाद में प्रो.नंदकिशोर पांडेय, डॉ. कुणाल कुमार, प्रो. कुमुद शर्मा, अनिल शर्मा जोशी, डॉ.अशोक कुमार आदि भी मौजूद रहे।

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पटना।कुमार

तेजस्वी. साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली के तत्वावधान में %आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव = व्यक्तित्व एवं कृतित्व% विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। श्रीरंजन सूरिदेव के तैल चित्र पर सामूहिक पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन हुआ। समारोह के संयोजक श्री अभिजीत कश्यप ने सभी गणमान्य अतिथियों का परिचय कराया तथा आगत अतिथियों को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष प्रो0नंद किशोर पांडेय ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पूर्व अध्यक्ष प्रो0नंद किशोर पांडेय ने कहा कि भारत ने विश्वगुरु की परंपरा का निर्वहन किया है। बिहार की सरजमीं से जिन साहित्यकारों का उदय हुआ, उन सभी को नमन करते हुए उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव को राहुल सांकृत्यायन और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की परंपरा में देखा जाना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि आचार्य जी को वह सम्मान नहीं मिला जिसके वह हकदार थे। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने उन्हें अपने आसन से नीचे उतरकर उन्हें सम्मानित किया था। प्रो0 पांडे ने आगे कहा कि उनकी जो पांडुलिपियाँ अभी प्रकाशनार्थ पड़ी हुई हैं उन्हें अतिशीघ्र प्रकाशित कराया जाना चाहिए। बाल साहित्य पर उन्होंने आठ पुस्तकें लिखीं। अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी को जोड़कर उन्होंने विराट कार्य किया। %दिया बहुत-बहुत ज्यादा, लिया बहुत-बहुत कम% इन पंक्तियों से आचार्यजी को प्रणाम निवेदित करते हुए उन्होंने अपनी वाणी को विराम दिया। स अवसर पर बिहार लोकसेवा आयोग के सदस्य प्रो0 अरुण कुमार भगत ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि रचनात्मकता की त्रिवेणी श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी। भाषा की दृष्टि से वे %त्रिभाषा परम्परा% के प्रतीक पुरुष थे। उन्होंने कहा कि उनके साहित्यिक आदर्श शिवपूजन सहाय, नलिन विलोचन शर्मा और लक्ष्मी नारायण सुधांशु थे। वे वैदिक ज्ञान परम्परा, बौद्ध दर्शन और जैन चिंतन के प्रकांड अध्येता रहे। उन्होंने जानकारी दी कि राजकुमार पाठक नाम उन्हें घर से मिला परन्तु श्रीरंजन सूरिदेव नाम उन्होंने स्वयं रखा। छायावादोत्तर काल में शीर्षस्थ हस्ताक्षर के रूप में वे कवि सम्मेलनों में भाग लेते रहे लेकिन काव्य से गद्य की ओर उनका रुझान बढ़ा। प्रो0 भगत ने कहा कि वे सम्पादकों के सम्पादक थे इसीलिए उन्हें सम्पदाकाचार्य भी कहा जा सकता है। शिवपूजन सहाय के साथ उन्होंने लंबे समय तक %परिषद पत्रिका% का सम्पादन किया। लगभग तीस वर्षों तक उन्होंने स्वतंत्ररूप से %परिषद पत्रिका% का सम्पादन किया। %धर्मायन% का भी सम्पादन उन्होंने कुछ वर्षों तक किया। उन्होंने कहा कि वे कहा करते थे कि उनका सारा जीवन खलिहान साफ करते हुए गुज़र गया। बात को आगे बढ़ते हुए उन्होंने कहा कि %मौलिकता के विसर्जन% का सिद्धान्त श्रीरंजन सूरिदेव ने ही प्रतिपादित किया था। %मेघदूत = एक अनुचिंतन% उनकी कालजयी रचना है। दो दर्जन से अधिक पुस्तकें उनकी प्रकाशित हैं और तीन दर्जन पांडुलिपियाँ उनकी प्रकाशनार्थ हैं। प्रो0भगत ने कहा कि %शब्दकोश% पर भी उन्होंने महनीय कार्य किया, अगर वह प्रकाशित हो तो यह हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि होगी। वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पुजारी थे। उन्होंने पश्चिम के %भोगवाद% को चुनौती दी इसीलिए उस दर्शन को मानने वालों ने उन्हें एक बढ़िया प्रूफरीडर भर माना था। ए0एन0कॉलेज, पटना के प्रधानाचार्य शशि प्रताप शाही ने अपने वक्तव्य में कहा कि %साहित्य अकादमी% का कार्यक्रम महाविद्यालय में होना, यह अपने आप में गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि आधुनिक हिंदी के शिल्पी श्रीरंजन सूरिदेव की चर्चा किये बिना हिंदी साहित्य की कल्पना अधूरी है। अपनी बातों को बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि उनका संस्कृत, हिंदी और प्राकृत पर समान अधिकार था। बिहार उनके हृदय में बसता था। राष्ट्रभाषा, राष्ट्रगौरव और बिहारी अस्मिता उनके रोम-रोम में बसती थी। उन्होंने आचार्य किशोर कुणाल जी के उद्धरणों का जिक्र करते हुए श्रीरंजन सूरिदेव के विराट और व्यापक व्यक्तित्व को व्याख्यायित किया। अपनी वाणी को विराम देते हुए उन्होंने प्रो0अरुण भगत को उनकी आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव को समर्पित सद्य प्रकाशित पुस्तक के लिए बधाई दी तथा ए0एन0कॉलेज की उपलब्धियों के विषय में बताया।साहित्य आकदमी, नयी दिल्ली के सहायक सम्पादक डॉ0अजय शर्मा ने कहा कि हम देशभर में ऐसे कर्यक्रम करते रहते हैं ताकि नयी पीढ़ी जागरूक हो सके। उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव का कर्मक्षेत्र बिहार की धरती थी इसीलिए इस कार्यक्रम का आयोजन पटना में किया जा रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ0 कुमुद शर्मा ने कहा कि %आचार्य% शब्द यूँही प्राप्त नहीं होता। उनकी वैचारिक संवेदना ने उन्हें साहित्य का सिरमौर बनाया। साहित्य के मापदंड को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने कहा कि जो बेहतर इंसान बनाये वही साहित्य है। प्रो0 शर्मा ने कहा कि आचार्यजी का साहित्य मनुष्यत्व का साहित्य है। उनकी उदारता और निष्कलुषता उनके साहित्य में दिखती है। आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के साहित्य की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि वे विशिष्ट और विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे शोधकीय प्रवृत्ति के धनी थे इस दृष्टि से उन्होंने आचार्यजी को नयी शिक्षा नीति से जोड़ा। आचार्यजी के शोध-प्रबन्ध पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि %प्राकृत% पर शोध करते हुए उन्होंने भारतीय मनीषा के सभी मूल्यवान तत्त्वों का विवेचन और विश्लेषण किया है। प्रख्यात साहित्यकार डॉ0कुणाल कुमार ने कहा कि आचार्य जी की विशेषता यह थी कि वे सबका समादर करते थे, उन्होंने कभी किसी को छोटा नहीं समझा। वे किसी भी व्यक्ति के नाम के साथ प्रशंसनीय विशेषण लगाया करते थे। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने जीवनपर्यंत हिंदी को संभालने का कार्य किया। वे कहा करते थे कि हिंदी विश्वभाषा बनने की तैयारी में है, वे भाषा के मर्म को पहचानते थे। अंग्रेजी और बंगला पर उनकी अच्छी गति थी। श्री कुमार ने आगे कहा कि उनके साथ बैठने से मन के भीतर का द्वंद्व शांत हो जाता था, साथ ही अपने भीतर की विराटता का अनुभव होता था। वे भारतीय मनीषा के मणिद्वीप थे। डॉ0 कुणाल ने आगे कहा कि जब भाव उमड़ता है तभी साहित्य रचा जाता है सिर्फ परिमाण बढ़ाने के लिए लिखना उन्हें नहीं सुहाता था। वे नए शब्दों के सर्जक थे, उन्होंने हिंदी को ऐसे कई शब्द दिए जो शब्दकोश में नहीं मिलते। श्री गुंजन अग्रवाल ने कहा कि बिहार में सबसे ज्यादा पुस्तकों की भूमिका और समीक्षा आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव ने लिखी है। तृतीय सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में हिंदुस्तानी अकादमी के अध्यक्ष प्रख्यात साहित्यकार डॉ0 उदय प्रताप सिंह ने कहा कि हमें आचार्यजी की व्यवहारिकता को अपने जीवन में उतारना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर लोगों ने उन्हें %प्रूफ रीडर% ही माना तो क्या प्रूफ रीडर होना छोटी बात है? एक पत्रिका के सम्पादक से पूछिए कि प्रूफ रीडिंग का दायित्व कितना बड़ा है। उन्होंने सभा कक्ष में बैठे गणमान्य अतिथियों से आग्रह किया कि उनके नाम पर किसी पुरस्कार का सृजन हुआ चाहिए। डॉ0 सिंह ने यह सुझाव देते हुए अपनी वाणी को विराम दिया कि आचार्यजी के नाम से सम्पूर्ण बिहार प्रान्त में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए, इससे आने वाली पीढ़ी आचार्यजी को जान सकेगी। अपने उद्बोधन में पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ0शिवनारायण ने कहा पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी, पंडित जानकी वल्लभ शास्त्री की वैदुष्य परम्परा में आचार्य जी को देखा जाना चाहिये इसीलिए उन्हें भी पंडित कहा जाना चाहिए। बिहार साहित्यिक पत्रकारिता का गढ़ रहा है, श्रीरंजन सूरिदेव ने बिहार की साहित्यिक पत्रिका को व्यापक रूप से समृद्ध किया। प्रख्यात साहित्यकार श्री कैलाश प्रसाद स्वच्छंद ने आचार्यजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। श्री मेहता नगेन्द्र ने आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव पर एक सुंदर कविता का पाठ किया।

मुख्य अतिथि बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने अपने अतिथि वक्तव्य में कहा कि आज टेक्नोलॉजी का युग है, अगर हिंदी टेक्नोलॉजी से जुड़ रही है तो यह बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि भले ही राजनीतिक राजधानी दिल्ली है, लेकिन जब भी साहित्यिक राजधानी की बात होगी तो पटना और बनारस ही अग्रणी होगा। श्री0 सिंह ने कहा कि बिहार में साहित्यकारों की बड़ी परम्परा रही है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर से ले कर श्रीरंजन सूरिदेव का जन्म इसी धरती पर हुआ है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी परंपरा ही यह रही है कि सभी प्रदेशों की संस्कृति का मिलन एक बिंदु पर होता है, यही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। उन्होंने कहा कि साहित्य अगर विलष्ट होगा तो उसका प्रचार नही होगा इस दृष्टि से हिंदी सही पथ पर बढ़ रही है, क्योंकि वह व्यवहारिक और लोक ग्राह्य हो रही है। राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह से जुड़े संस्मरणों को सुना कर उन्होंने अपनी वाणी को विराम देते हुए आश्वासन दिया कि आचार्य जी के %शब्दकोश% के प्रकाशनार्थ जो भी सहयोग होगा , वह जरूर किया जाएगा।

बिहार विधान परिषद् के सदस्य राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के साथ उनका व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा, वे देखने में जितने सुंदर थे उससे कहीं ज्यादा उनके व्यक्तित्व में गहराई थी जो उनके साहित्य में दिखती है। उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव और आरसी प्रसाद सिंह बिहार की साहित्यिक विभूतियां हैं। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि आज यह समय आ गया है कि हमें हिंदी को वह गौरव दिलाना है जिसकी वह हकदार है। उन्होंने इसी क्रम में कहा कि मैथिली लिपि लुप्त होती जा रही है। मोबाइल में आ रही नयी तकनीकों ने लिखने-पढ़ने की परंपरा पर चोट की है। उन्होंने कहा कि आज पाश्चात्य जीवन दर्शन को जीने वाले हिंदी का साहित्य सृजित कर रहे हैं, इनके विचार भारतीय चिंतन-दर्शन से दूर दिखाई पड़ते हैं, आचार्यजी जैसे रचनाकारों की आज अत्यधिक आवश्यकता है।

दूसरे सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष आनन्द शर्मा जोशी ने कहा कि बिहार के साहित्यिक विकास में आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव का योगदान अतुलनीय है ऐसे में उनके नाम पर एक युग का नामकरण होना चाहिये। उन्होंने आचार्यजी की %मौलिकता के विसर्जन% सिद्धांत पर प्रकाश डाला। डॉ0 जोशी ने अपने उद्बोधन में कहा कि विचारकों और बुद्धिजीवियों का एक वर्ग इस देश में रहा और है जो इस देश को खण्ड-खण्ड में विभाजित करना चाहता है, ऐसे समय में देश को जोड़ने का प्रयास आचार्यजी की रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव की अप्रकाशित पांडुलिपियों को प्रकाशित करने में हर प्रकार का सहयोग करने को तत्पर है। हजारी प्रसाद द्विवेदी को उद्धरित करते हुए उन्होंने कहा कि आचार्यजी की प्रशंसा करते हुए द्विवेदीजी ने कहा था कि कालिदास पर लिखने से पहले शायद ही किसी ने इतना पढ़ा होगा। अपने उद्बोधन को विराम देते हुए उन्होंने इस आयोजन के लिए प्रो0अरुण भगत का आभार प्रकट किया।

साहित्यिक राजधानी की बात होगी, तो आयेगा पटना और बनारस का नाम

श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर राष्ट्रीय परिसंवाद

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। भले ही राजनीतिक राजधानी दिल्ली है, लेकिन जब भी साहित्यिक राजधानी की बात होगी तो पटना और बनारस ही अग्रणी होगा। बिहार में साहित्यकारों की बड़ी परम्परा रही है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर से ले कर श्रीरंजन सूरिदेव का जन्म इसी धरती पर हुआ है।

ये बातें बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहीं। वे केंद्र सरकार के साहित्य अकादमी तत्वावधान में आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव = व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद में मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। समारोह का आयोजन शनिवार को यहां ए. एन. कॉलेज के पुस्तकालय सभागार में किया गया था। श्रीरंजन सूरिदेव के तैल चित्र पर सामूहिक पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का विधिवत उदघाटन हुआ। समारोह के संयोजक अभिजीत कश्यप ने सभी गणमान्य अतिथियों का परिचय कराया तथा आगत अतिथियों को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। उदघाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष प्रो0नंद किशोर पांडेय ने की। मुख्य अतिथि बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि आज टेक्नोलॉजी का युग है, अगर हिंदी टेक्नोलॉजी से जुड़ रही है तो यह बड़ी बात है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी परंपरा ही यह रही है कि सभी प्रदेशों की संस्कृति का मिलन एक बिंदु पर होता है, यही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। साहित्य अगर क्लिष्ट होगा, तो उसका प्रचार नहीं होगा इस दृष्टि से हिंदी सही पथ पर बढ़ रही है, क्योंकि वह व्यवहारिक और लोक ग्राह्य हो रही है। राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह से जुड़े संस्मरणों को सुना कर उन्होंने अपनी वाणी को विराम देते हुए आश्वासन दिया कि आचार्य जी के 'शब्दकोश' के प्रकाशनार्थ जो भी सहयोग होगा, वह जरूर किया जाएगा।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष प्रो. नंद किशोर पांडेय ने कहा कि भारत ने विश्वगुरु की परंपरा का निर्वहन किया है। बिहार की सरजमीं से जिन साहित्यकारों का उदय हुआ, उन सभी को नमन करते हुए उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव को राहुल सांकृत्यायन और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की परंपरा में देखा जाना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि आचार्य जी को वह सम्मान नहीं मिला जिसके वह हकदार थे। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने उन्हें अपने आसन से नीचे उतरकर उन्हें सम्मानित किया था। प्रो. पांडेने कहा कि उनकी जो पांडुलिपियाँ अभी प्रकाशनार्थ पड़ी हुई हैं, उन्हें अतिशीघ्र प्रकाशित कराया जाना चाहिए। बाल साहित्य पर उन्होंने आठ पुस्तकें लिखीं। अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी को जोड़कर उन्होंने विराट कार्य किया।

बिहार लोकसेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि रचनात्मकता की त्रिवेणी श्रीरंजन सूरिदेव के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी। भाषा की दृष्टि से वे 'त्रिभाषा परम्परा' के प्रतीक पुरुष थे। उन्होंने कहा कि उनके साहित्यिक आदर्श शिवपूजन सहाय, नलिन विलोच शर्मा और लक्ष्मी नारायण सुधांशु थे। वे वैदिक ज्ञान परम्परा, बौद्ध दर्शन और जैन चिंतन के प्रकांड अध्येता रहे। उन्होंने जानकारी दी कि राजकुमार पाठक नाम उन्हें घर से मिला परन्तु श्रीरंजन सूरिदेव नाम उन्होंने स्वयं रखा। छायावादोत्तर काल में शीर्षस्थ हस्ताक्षर के रूप में वे कवि सम्मेलनों में भाग लेते रहे लेकिन काव्य से गद्य की ओर उनका रुझान बढ़ा। प्रो. भगत ने कहा कि वे सम्पादकों के सम्पादक थे इसीलिए उन्हें सम्पदाकाचार्य भी कहा जा सकता है। शिवपूजन सहाय के साथ उन्होंने लंबे समय तक 'परिषद पत्रिका' का सम्पादन किया। लगभग तीस वर्षों तक उन्होंने स्वतंत्ररूप से 'परिषद पत्रिका' का सम्पादन किया। 'धर्मायन' का भी सम्पादन उन्होंने कुछ वर्षों तक किया। उन्होंने कहा कि वे कहा करते थे कि उनका सारा जीवन खलिहान साफ करते हुए गुजर गया। बिहार विधान परिषद् के सदस्य राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के साथ उनका व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा, वे देखने में जितने सुंदर थे उससे कहीं ज्यादा उनके व्यक्तित्व में गहराई थी जो उनके साहित्य में दिखती है।

ए.एन. कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रो. शशि प्र[illegible] ने [illegible] कि साहित्य अकादमी% का कार्यक्रम महाविद्यालय में होना, यह अपने आप में गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि आधुनिक हिंदी के शिल्पी श्रीरंजन सूरिदेव की चर्चा किये बिना हिंदी साहित्य की कल्पना अधूरी है। अपनी बातों को बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि उनका संस्कृत, हिंदी और प्राकृत पर समान अधिकार था। बिहार उनके हृदय में बसता था।

साहित्य आकदमी के सहायक सम्पादक डॉ. अजय शर्मा ने कहा कि हम देशभर में ऐसे कर्यक्रम करते रहते हैं ताकि नयी पीढ़ी जागरूक हो सके। उन्होंने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव का कर्मक्षेत्र बिहार की धरती थी इसीलिए इस कार्यक्रम का आयोजन पटना में किया जा रहा है।

दूसरे सत्र के अध्यक्षीय संबोधन में आनन्द शर्मा जोशी ने कहा कि बिहार के साहित्यिक विकास में आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव का योगदान अतुलनीय है। ऐसे में उनके नाम पर एक युग का नामकरण होना चाहिये। डॉ. जोशी ने कहा कि विचारकों और बुद्धिजीवियों का एक वर्ग इस देश में रहा और है जो इस देश को खण्ड-खण्ड में विभाजित करना चाहता है, ऐसे समय में देश को जोड़ने का प्रयास आचार्यजी की रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव की अप्रकाशित पांडुलिपियों को प्रकाशित करने में हर प्रकार का सहयोग करने को तत्पर है।

दिल्ली विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. कुमुद शर्मा ने कहा कि आचार्य शब्द यूँ ही प्राप्त नहीं होता। उनकी वैचारिक संवेदना ने उन्हें साहित्य का सिरमौर बनाया। साहित्य के मापदंड को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने कहा कि जो बेहतर इंसान बनाये वही साहित्य है। प्रो. शर्मा ने कहा कि आचार्यजी का साहित्य मनुष्यत्व का साहित्य है। उनकी उदारता और निष्कलुषता उनके साहित्य में दिखती है।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कुणाल कुमार ने कहा कि आचार्य जी की विशेषता यह थी कि वे सबका समादर करते थे, उन्होंने कभी किसी को छोटा नहीं समझा। वे किसी भी व्यक्ति के नाम के साथ प्रशंसनीय विशेषण लगाया करते थे। उन्होंने जीवनपर्यंत हिंदी को संभालने का कार्य किया। वे कहा करते थे कि हिंदी विश्वभाषा बनने की तैयारी में है, वे भाषा के मर्म को पहचानते थे। अंग्रेजी और बंगला पर उनकी अच्छी गति थी। श्री कुमार ने आगे कहा कि उनके साथ बैठने से मन के भीतर का द्वंद्व शांत हो जाता था, साथ ही अपने भीतर की विराटता का अनुभव होता था।

तृतीय सत्र के अध्यक्षीय उदबोधन में हिंदुस्तानी अकादमी के अध्यक्ष प्रख्यात साहित्यकार डॉ. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि हमें आचार्यजी की व्यवहारिकता को अपने जीवन में उतारना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर लोगों ने उन्हें प्रूफ रीडर ही माना, तो क्या प्रूफ रीडर होना छोटी बात है? एक पत्रिका के सम्पादक से पूछिए कि प्रूफ रीडिंग का दायित्व कितना बड़ा है। उन्होंने सभा कक्ष में बैठे गणमान्य अतिथियों से आग्रह किया कि उनके नाम पर किसी पुरस्कार का सृजन हुआ चाहिए। डॉ0 सिंह ने यह सुझाव देते हुए अपनी वाणी को विराम दिया कि आचार्यजी के नाम से सम्पूर्ण बिहार प्रान्त में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए, इससे आने वाली पीढ़ी आचार्यजी को जान सकेगी। पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. शिवनारायण ने कहा पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी, पंडित जानकी वल्लभ शास्त्री की वैदुष्य परम्परा में आचार्य जी को देखा जाना चाहिये, इसीलिए उन्हें भी पंडित कहा जाना चाहिए। बिहार साहित्यिक पत्रकारिता का गढ़ रहा है, श्रीरंजन सूरिदेव ने बिहार की साहित्यिक पत्रिका को व्यापक रूप से समृद्ध किया। प्रख्यात साहित्यकार कैलाश प्रसाद स्वच्छंद ने आचार्यजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। मेहता नगेन्द्र ने आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव पर एक सुंदर कविता का पाठ किया। इस अवसर पर प्रो. वीरेंद्र झा, डॉ. ध्रुव कुमार, गौरव रंजन, शोभित सुमन, कृष्णा अनुराग, दिव्या, सुमित कुमार आदि ने कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता दी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्राध्यापक, शोधार्थी और छात्र शामिल हुए।